

II-4 धर्मरत्न बज्राचार्य सुख श्री महाबिहार

39

१ कर्हि न ॥ नारुगृह नग न पुर सुस्मासि ॥ अथायुष्मा नमहा मोक्ष लायना नारुगृह नग न पुर सुस्मासि ॥ अथायुष्मा नमहा मोक्ष लायना नारुगृह नग न पुर सुस्मासि ॥
 का क ४ पा ५ वी व नै व ति ॥ म ती य ला या शे प का नी य ला ध न रु ग वा क ना प र्सी क मित्वा रु ग व त ४ पा शे ठि न सा वी दि त्वा य का क
 २ नी ष द द का क नि ष र्धु ॥ पु न ४ आ युष्मा नमहा मोक्ष लायना रु ग व क म रु द वा च त् ॥ ॐ हा ह रु ग व न का ल स्वे वी न वा सी य ला
 पा ५ वी व न मा दा य ना रु गृह म हा न ग नी यि ॥ अ य पु क मित्वा रु ग व न अ चि न ष का क स्वे त द रु व त् ॥ अ न पा ग सा व द क
 न हि ना रु गृह न ग नी यि ॥ अ य चि न रु य न ना ह य न गु ष्ठा वा स द वी न का यी न ना प र्सी क म र्थ ॥ चि नै भे ष्ठा वा सी द वी न का य म
 प र्सी का क स्वे च ह रु य था व ल वा न पु न ४ र्सी मि र्ति ता वा इ प सा न थ यी या सा नि ता वा इ र्सी मि र्ति य त् ॥ अ त क न क ला वी हा न

२

म ना रु गृहा धे हा य म म पुर सु म्प ष्ठा वा स द वी न का य य स्फु र्ति ॥ अ द्र क्ती म रु ग वा न र्सी व इ ला ४ ष्ठा वा स का यि का द व पु षा
 इ न रु प वा ग क र्क ड क्ता च पु न य ना ह रु ना प र्सी क मित्वा ॥ म म पा शे ठि न सा वी दि त्वा का क स्फु र्ति स ग का क स्फु र्ति ता र्सी व इ ला ४
 ष्ठा वा स का यि का द व पु षा म म ग म्प अ ध रा ध न न ॥ क ल्या न भ त सह र्सी र्सी वा धि मित्वा न वा धि यी न या क र्सी चि न स न च म रु
 वृ ष्ठा ला क र्सी न ड य य न्ना ॥ ॐ र्सी वी दि त्वा रु म्प इ ला ४ ष्ठा वा स का यि का द व पु षा म म पा शे ठि न सा वी दि त्वा पु क मित्वा ॥
 रु स म रु ग व न रु द रु व त् ॥ या व इ ४ र्ख म म दानी या च पु न र्सी धि य रु हि ना म क ल्या न भ त सह र्सी र्सी न ना ह य न रु ग वी रु
 ना प र्सी क मित्वा रु ग व क म रु र्थ यी न पृ क यी ॥ य था रु ग वा न्वा क नि ष ति रु म्प त्वा न यि षा मि ॥ ॐ ह रु ग व न्कि मा ह ॥ अ

१२

परिभाषा

ह

वसूक्तं गवाना यस्मात्तमहाभोद्रल्ल्यायनमरुदवानवत्॥ पत्रोक्तं स्वत्पुनर्भोद्रल्ल्यायनं कल्पहि अस्मिन्वार्थहि अथमर्थहि त
 आगच्छहि अहं हि सम्पत्तुर्विदुहि॥ कुशलं मुलान्यवलीयि गतिं अदिर्सेवाधिपार्थयमानं हि॥ अहिजानामि स्वत्पुनर्भोद्र
 ३ मोद्रल्ल्यायनं विदुः कति यावत्तु मुनिना मध्यानी मध्यानी॥ यमया सञ्जावकसीयाः सत्कृता गुणकृता मानिता पुत्रि
 ता अर्थविताना रुचक वरुत्तु न श्यायिर्सेवाधि मरुत्पार्थयमानं न च मरुत्तु वदुः गवका वाक्यं नत्सु॥ रुविष्यमि त्वमेना
 गतमध्यानी तथा गतं हं सम्पत्तुर्विद्या च नक्षत्रं सगता विदुः नृनः पुनर्भोद्रल्ल्यायनं न चिः अहं दवाना चि मनुष्या
 नां च॥ अहिजानामि हं स्वत्पुनर्भोद्रल्ल्यायनं अहं वदुः गतं सत्कृता विदुः कति नाम भयकानां॥ यमया सञ्जावकसीयाः स

३

विभाषा

विभाषा

कृता गुणकृता मानिता पुत्रिता अर्थविताना रुचक वरुत्तु न श्यायिर्सेवाधि मरुत्पार्थयमानं न च मरुत्तु वदुः गवका वाक्यं नत्सु॥ यथा यथा मरुत्तु निवर्तु तथा सर्वं कर्तुर्वि॥ रुविष्यमि त्वमेना गतमध्यानी॥ अहिजानामि हं मोद्रल्ल्यायनं यच्च वदुः गतानि य
 मारुद्रना मध्यानी सर्वं कर्तुर्वि रुविष्यमि त्वमेना गतमध्यानी॥ अहिजानामि हं मोद्रल्ल्यायनं अहं वदुः सत्कृता विदुः कति नाम भयकानां॥ यमया सञ्जावकसीयाः स
 ना मध्यानी॥ अहिजानामि हं मोद्रल्ल्यायनं कृता वदुः कति या पुष्यना मध्यानी॥ अहिजानामि हं मोद्रल्ल्यायना दृष्टा दृष्टा वदुः
 दृष्टा सत्कृता विदुः कति नाम भयकानां॥ यमया सञ्जावकसीयाः सत्कृता विदुः कति नाम भयकानां॥ अहिजानामि हं मोद्रल्ल्यायनं यच्च वदुः गतानि य
 अहिजानामि हं मोद्रल्ल्यायनं यच्च वदुः गतानि यमारुद्रना मध्यानी यमया सञ्जावकसीयाः सत्कृता॥ अहिजानामि हं मो

द्रव्यायननवविबुद्धसहस्रालिकाधयनामध्यानि॥ अरिज्ञानाम्यहं मोक्षलयायनपंचदशबुद्धसहस्राधिपतायनाध्या
 नि॥ अरिज्ञानाम्यहं मोक्षलयायनद्वौबुद्धसहस्रौकोष्ठिन्यनामध्या॥ अरिज्ञानाम्यहं मोक्षलयायनचतुनशीतिप्रत्येक
 ४ बुद्धसहस्राधि॥ अरिज्ञानाम्यहं मोक्षलयायनसमस्तगुणानामकथगगार्हसम्पत्तवुद्ध॥ अरिज्ञानाम्यहं मोक्षलयाय
 नवुद्धसहस्रैर्बुद्धज्ञानामध्यानी॥ अरिज्ञानाम्यहं मोक्षलयायनचतुनशीतिबुद्धसहस्राधि॥ बुद्धज्ञानामध्यानी॥
 अरिज्ञानाम्यहं मोक्षलयायनपंचदशबुद्धसहस्राश्रयिस्वनामध्यानी॥ अरिज्ञानाम्यहं मोक्षलयायनद्वौषष्टिवुद्धभता
 निनामध्यानी॥ अरिज्ञानाम्यहं मोक्षलयायनचतुषष्टिवुद्धान्समिताविनामध्यानी॥ सप्रज्ञानामोक्षलयायनकथ

भा. वि. पञ्चा.
 उपा. उपा.
 मानवज्ञ. उ.
 ताप. पुनः क.
 समं. जं. बुद्ध.
 न. तजि. १२.

गगार्हसम्पत्तवुद्धायुमेधयलवाधिसत्त्वनयथर्मकुशलमूलान्यवनापितानि॥ ग्राह्यावेनाचननचक्रवर्तिरुत्तन
 शयनिर्लवाधियार्थयमानन॥ सप्रज्ञासखलपुनर्मोक्षलयायनकथगगार्हसम्पत्तवुद्धचतुनशीतिकोटिवर्षबहस्राधिमनु
 षामायुषः प्रमादं अरुषि अकृताचडच्चावचता आयुः सप्रज्ञासखलपुनर्मोक्षलयायनकथगगार्हसम्पत्तवुद्ध
 स्या॥ प्रयत्ननिपातारुतापथमश्रवकस्तीनिपाताषष्टिवर्तिकोटिया अरुषिसर्वेषामर्हकानि कीदृशाश्रवाः सौषित्व
 तानीं सौम्यगार्हाविमुक्तानीपीनिकृन्तरुवर्षाः ऊनानामनूपाफस्वकार्थनिर्दिष्टियाचतुनवीतिकोटिया अरुत्॥ स
 र्वेषामर्हकानि कीदृशाश्रवाः सौषित्वतानीं सौम्यगार्हाविमुक्तानीपीनिकृन्तरुवर्षाः ऊनानामनूपाफस्वकार्थनी ॥

नस्मिन्नात्मनां यच्च दधसहस्राणि अदिस्पनामध्यानां ॥ दोषाणि च भूतानि सगुणानामन्यान्धनामध्यानां ॥ बहुषाणि सहस्रा
 नि समिता विनामध्यानां ॥ ५ ॥ चकालिगभिना ॥ अन्यचदधवल्लो अपि न माना सर्वश्रुतिस्तथायसमितालाकयथागानि
 चवलानि ॥ कालितरुषीमहापुत्रुषलरुधोवनाधी सर्वश्रुतिस्तथायकालनदधुनिकेसखाच ॥ कालाश्रुतिस्तवत्सुदानुर्ध
 सत्कृतस्य श्रुतिर्नवीयानि मर्यादिके प्रश्रुतिस्तवत्सुविपाताय ॥ ७ ॥ मोक्षलयायनश्रुतिमिति मर्यादयकल्पनलो
 नामसम्पत्स्वुद्धाश्रुतिविषयगताः सहस्रसम्पत्स्वुद्धाविद्याचनसम्पन्नः सगुणालोकाविद नूरुनः पुत्रुषदस्यभा नयि ८
 भास्वाद्वानीचमनुष्याधीच श्रुतिरुदा नाकाचकवर्हि श्रुतिषा गता मया तस्य रगवता नलवता च नुनगीति कृत्तगिभन

द्वायेह. वर्द्धमान्. प्रथममिष्टता. हविग. विरुविष्टर. रूपवती. दुर्जया. शम्भुदेश. योवरास्यता. अभिषेकाय. त्पेतादशभूमय.

सहस्राधिकानि तानि चिन्तादिदर्शनीयानि ॥ सफानि नित्यानि स्वर्गस्य नृपस्य मुक्ताया वैश्वस्य स्फुटिकस्य मूला नगलस्य ला
 हितिकायाः तानि मया तस्य रगवतानि यी कृत्वा बाधयश्रुतिनिहितं ॥ नगाववृद्धा रगवकापीनि नवीयानि कृत्वा वयुवनाका
 श्रुतिरिषिकारुवति ॥ ५ ॥ प्रथममश्रुतिर्नवीयानि कृत्वा लाकरुविषयि कृत्वा तर्हि मया मेरुयाव्या कृत्वा प्रथममाकृता बुद्धारुविषयि
 मिमसारगवान् च नुनगीति हि श्रावक सहस्रहि च नुनगीति सर्वरुवीवर्हि स्फुता सर्वरुमानलाकरगवान् च नुनगीति
 हि श्रावक सहस्रहि साधु श्रावस्वर्गदेवनिकायगकर्तानि ईरुलाक ७ ॥ हागकर्त ७ ॥ हवर्मिदधायि ॥ श्रुतिरुयानाका
 चकवर्हि रवामि ॥ च नुनगीति कृत्तगिभन सहस्रादिका नापयित्वा रगवता नलवतानि नयति मि ॥ ७ ॥ यमोक्षलयायनप्रतिधि

न३

[illegible]

胡氏

[illegible]

४२

ल॥ गोष्ठितामंरिसुखासंपनीतातेठपनाकमनवलेनथभूनेठनवृतावसासमकालीपायवातिनपनिषकमैवांकी॥ सीठर्याविम
 हिमधुमंयसमल्लादिवानगर्जाननुद्ध॥ एगेनवांसमुदागर्माविनीगापुष्पमांगरामिदपनिपृच्छ॥ कानुहृदिनिहपस्यथाच
 कायनंमीरुनरुनसुताडपनीतानिर्वृत्तिमुपगतासहस्रांकावृहिकात्रभांमैहौर्ययथावत्॥ दवंखलुप्रसनाकाठधपात
 संप्रसखलीनक्षितावनानेवगांलूनो कलिषातयावर्त्तागतासुष्ममागतामिदपनिपृच्छयपानगभा॥ तस्यैवकंप्रतिधी
 समुष्मिकाठधपस्यधुतधर्मधानीलधुताकमोदठवलस्यथीमताठवीन्दुहिनित्रभासहामुन॥ साचरिक्तगदासिपुन
 र्कृताकाठधपाधुतनकाजिनान्मकापडिलिङ्गिनीर्यतामुयागताएगेनवान्नतगनीनमानसभा॥ दृग्धतदृग्धतपुवननृपध

२

निहंकाष्टसंचयंगनी॥ तथागतादिगृहवानैति॥ गिनामुदानयादठिनपुष्टातरावलकृदी॥ कानुमोरुवेमपस्यपा
 मांगामिषाति॥ यद्ययंकलकावनीपमानिर्वृत्तागारिवंधनीविना॥ केल्वैरुल्लिपुटांमहायपादताजिनवनस्पकाठधपा॥ मु
 र्दनानियमितामहर्षिनापठिभमिदंनयनस्यनमुन॥ तौचंचकंचलकिताकंता॥ दवंदानववर्वाहिवादितानि॥ सुतोर्गर्थवि
 दार्यताविनी॥ दवंयकुरुकुर्गानुरुविताकोकमोठनीसमन्निपुष्टितयपाक्षिरि॥ समनुमर्चचमुन॥ आलपठुताधनंमहर्षिनी
 अन्तिकावचनं॥ काठधपसुदेकिविमोठरिधेनकमोमैनभायगासंपगतांसपुता॥ कुरहिकानधमा॥ कामादयथानिरोपनय
 नारिनीदिनो॥ चवंश्रुत्वाअर्तचयधनाकाठधपंरुदमुवाच॥ पल्लिताश्रुवगद्विषावसाविता॥ नाहिरिपुमदाहिरिमोक

३

तानि३

मोतमि तो क म च मो महामुनभा नारदन न जनताहि पीदि तो ॥ ना विरुति मुनि ना यथा पुना च व मत दनु पथ सुवता सो नैप र्थ गिन ॥
 सा पुनः पुनः लोक मो प्र प न च कल क ॥ क म त लो रि पी उ ब ल न ग म मु ॥ गे न व प न य वृद्धि य ॥ व न्दि ता व धु त ध र्म च नि धा न न
 च गु ध ध न ल ग म मु ना ॥ ला क ना थ चि त्ता क ष्ट रु ज्जा वा यु ध ग वि धु त व दी ष्य ति ॥ द घ मा न कि न च रु ध नो न प च तानि व धि रु त ॥
 स गानि ॥ म कुर्य कि सी ह ता स मु प र्थ नि र्व ती स म य का ल स म गी ॥ कि नि र्व ता प्र व न ल रु ध धा नि यान् ग म रु ॥ स स ना स न ना ता
 का गु ध ॥ ॐ ह चि नै प नि वा स व र्ण वि र वा या वि रु हा म र्थ द ह ॥ स र्व र्थ नि नि षि त का र्थ ॥ षा फ म न्यु त म ॥ क म न न र्गी ॥ स र्व ग ता स प्र व नि र्व ती मु ध म ॐ ह
 व पी ति मु प र्थ नि र्व ती स म य का ल स म य ता ति थ नि र्व ता प्र व न ल रु ध धा नि यान् ग म रु ॥ स स ना स न ना ता का गु ध ॥ ॐ ह चि नै प

१०

५५

नि वा स व र्ण वि र वा या वि रु हा म र्थ द ह ॥ स र्व र्थ नि नि षि त का र्थ ॥ षा फ म न्यु त म ॥ क म न न र्गी ॥ स र्व ग ता स प्र व नि र्व ती मु ध म ॐ ह
 व ॥ प्र व मु क्त धु त ध र्म स वि रु द्ध का ष प पा व वी रु दा व धि रु ता ॥ न ख ल रु व रु न नृ पा दा य वि मु क्त नि र्व ती स म नृ ग म ॐ दे व र्गी र्थि का वी ह
 श नृ ग ता ष क्ता पु न र्प ति सो मो न दा र्थ ॥ धु म का लि की म ति ध म न स्य प्र त द व च रु न रु धि य ता ला क ना थ व ह वा न न र्गी हा ॥ य च ना ग
 त म हा मी ति भू ना र हि ना ड प व द यु न नृ द ग यदि न र्गी का लि य सा स न ठा मु नी ॥ कि च प्र व र्ण ति ह ता ॥ स स म ग्रा ग म य थ स ग ता न सा स न म ग्री
 ॥ य थ ॐ द स र्प नि गी त प थ र्थ चि न र्न न स नृ व वि ना व ॥ प्र व म र्त्ति ॥ रु व धि रु ता का ष प स्य व च नै प ति पु र्ण ॥ चि र्म स्य पु प ग ना क
 ॐ दा नी र्ध ध र्म ध न र्ग ग ना सा ॥ न म्प का न व न स स मृ द्वा मा ग ध स्य म ग धा धि पी ति स्य पु न व न ॥ रु व रु ना रु ग रु ह र्मी स्य पु

५२

५

अपि स्रग्गुहायां ॥ पर्वतस्य वेहा नवनख उह भक्ति नव वपा ॥ ७ ॥ विविध पादय भिला कल रुम त्रय रव दुध मी समा स्यात् ॥ तच्च नि
 द्वि वि भिता वचल स्रग्गुहा ॥ खग पथ कि न पूजा ॥ तत्कृष्ण कन पुवली नामान सै सभा पथ ही सयु था ना ॥ ८ ॥ प्र ति छि ता न ग म ग व न स्य
 या स्त त द्य न ॥ मु प र्ण नि ष ष्ठु सा स न च स ग र स्य मु गी ॥ ९ ॥ द व ई ई रि ग ना नि न द स्य ॥ त च ई ई रि नि ना द नं द क ई र्त्वा भ स न क ना स ग
 त स्य ॥ १० ॥ रू मी क स्य म नु द्ध च धा र्ष का ष्ठ प धु न ज ॥ द म च ॥ किं उ हा ष्ठ धू न धू ना स म कौ प म दि नी स म नि ता स स मू डा ॥ ११ ॥ द व ई ई रि
 न वा ष्ठ म ना ह्ति दि व मा र्त्वा व क न भ ष्ठ स मी गी ता नू वा च ॥ धू न ध मी स मी गी का ष्ठ प धि न स त वि स र ता ॥ १२ ॥ न स नि प ति ता म नू र्
 धा ष्ठ र्त्वा सा स न व र्त्त स म प्र क स म ग व लै ने क ध धा र्मि गे न वा नु मु दि ता म नू र्त्वा ॥ १३ ॥ प्र क स प्र ति म स्य क ना कि षा स नै गृ ध्र यु स म

११

५०

सर्व

गुं ॥ सा हि ने क र व क ल्प ग म हि नी स र्व य न न द व ग द्ध ना ॥ १४ ॥ व म स्य प ग ना न ना र्थ मा कृ यि धा ह प्रे डा ॥ १५ ॥ पा नि मु क्त ॥ १६ ॥ सा ली र्त्वा प न मा र्थ
 मा ष्ठ की स र्व ता व रु व इ ष्ठ र्वा नि ना धी का ॥ १७ ॥ प पु र्ण नि न द वी ह ता र्थ व र्त्त यि धि व न च क म रू षी ॥ १८ ॥ व र्त्त के हि स हि मी नि हि म नू ग धा वि
 न य वा दि ना वि ना स र्व का टि यु ता नि ना य का ॥ १९ ॥ ज्ञा ति उ न्न म न द्वा त्स मू द्ध न ॥ २० ॥ सा वि भा कृ त वा रि नी दि नी ता ष य न्न न म नू न न सी हा ॥
 २१ ॥ थि य स र्व प न वा दि स पि र्त्वा नि र्द्वा रू रू ग वा नि न प क्ता ॥ २२ ॥ त्र ष्ठ र व च नै म ना न र्म का ष्ठ प ष्ठ धू न ध मी धा नि ॥ २३ ॥ द व र्त्त धा मू दि ता न
 रु हि ता म्ना ह न कि व च नै म ना न र्म ग सा धू सा धू न ध मी का वि दा षा ॥ २४ ॥ स न क ला अ नै न्प था रा ष स गु द म न क वृ द्धि न ॥ २५ ॥ उ न च
 न न न म नू र्त्वा पि ता सा हि द व म नू ज्ञा न उ रू मा सा हि अ ग पु नू धा म हा नि ॥ २६ ॥ सा हि नि ॥ २७ ॥ स न द म रू र्म प ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ द वा हि ता य पा नि ना

कनस्कन्धद्वितीयां मुखशयमारुनपिष्ठकदलितपरावलाद्वितीयादवावल^नद्वितीयादवावलनजानता॥ यस्ययंगुलकथाप्रवरुता
 कुरुसर्पविनीतिनसन्निहासुत्थकामश्रुपुन्रधधद्वितीया॥ गमुमुकुडविषवैरुसन्निहायसिंयंगुलकथाप्रवरुता॥ कनदृष्ट
 सवलीसखद्विष्टिष्टिपनमसाधुद्विष्टिष्टि॥ तिमस्तनवताप्रकाशितसर्ववितागनीचिताङ्गददुर्ग॥ इदमदिनकनजथाकिर्मीनय
 तारुवधितिनान्वशाङ्गिता॥ उद्वर्गजिनीदवाकर्ननिष्परापनगनगधीअसंयताविद्विद्यादवलपानिर्मीगता॥ इव्वनविजिनवला
 चक्रुमांलकुरुधैरुगवतस्पपन्धथनिर्वृताकनकर्तव्यसन्निहाधिरुवांसनदृष्टसन्निहावालिकानगननुपसन्निहा॥ यद्यमामकु
 भलानसंचयानिर्वृतापनमवृद्धसागनाहृक्कानगधगहिनायकानंदरुपुन्रधसिंहनर्दिनी॥ रुवमन्यमनधीनिनीअप्रतस्पड

कस्तुअकननीविद्यत॥ दिवापुष्पावनमसिष्ठकनरुक्तसागतवर्षुताषध॥ सुवीतिननमनुसदानवाअग्रपुद्गलगहनवतसा॥ कन
 चपचलितपर्वतरसागनध्वलितमहायूधिध्वाअम्बनानिगागलासमस्तवताशामयकिपनिद्रमानसा॥ सूर्यकाठिविमलीप
 नरासिर्तुअद्रुतपुजिनवर्षुताषनादिवावदननसानुवासिर्तुसारुक्तअमृतागन्धिकनरुमिति॥ ॥ अथखल्वायुष्मान्मोक्षलया
 यनाआयुष्मर्तुमहाकाष्ठपमामकुयाति॥ व्यवस्थापयजिनपुद्गवधिरुताथपनिषायीसिंयगतानिमानसानि॥ जानयु
 मिति॥ अथानिनुर्धउपालिचक्रुविनवअलकुललरुदियसुन्दननंदचकाष्ठधउवाच॥ अवलाकथथजिनात्मकाध्विनी
 निषनिषायासंभयचयानिष्टकथ॥ यस्ययद्रुत्थारुवादिनि॥ साधुतिप्रतिश्रुत्वजिनगामुविष्ठा॥ नदाष्टपव्यक्तिपनवि॥

रुनिकमवा मलकं तथा ॥ पलम्बवा इयथा रूतिका षधया ऽदमववीत् ॥ गृहकूटस्थमिखलनिर्मिमविस्थानम् ॥ अस्मादवा सह
 आपनिषायसिमा गता ॥ यथा सर्वा रूतिका नया जिह्मं यानया तथा तथा विविक्तवृत्तं निरूतिका षधया ऽदमववीत् ॥ गणितकम
 या भयानिर्मितगगा धलस्य ॥ विविधगंधिपुष्पा षधयवा यदुसर्वतः ॥ मानुषानामामगन्धः षधधीयुमकनहापय ॥ हतैष्यं ॥
 नामवठिरूतिका षधय ऽदमववीत् ॥ तथा उत्पादय श्रीष्टीसमाधिं सुगतात्मजयथा गृहीहर्षानिर्वर्तयों इयानिनगकं यय
 नागतीव नूतनामवठिरूतिका षधया ऽदमववीत् ॥ अर्नतिदं समसकामनुषा धीनिवर्तया अजकं न्नामवठिरूतिका षध
 या ऽदमववीत् ॥ कूक्षीपियासाव्याधिं वमनूषातीतिवर्तय ॥ साधुगिरिप्रीतिश्रुत्वा का षधय षधडिनात्मजा ॥ यथा हाफा

१३